दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 57* ❑ *अंक-17* ❑ *दिल्ली* ❑ *जून 2019 (द्वितीय)* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

अनार्य संस्कृति के नायक-2

• एस.एल. सागर

कायव्य–ये अनार्य थे। सदाचारी और परम धर्मनिष्ठ थे, महाभारत में इनका वर्णन आया है। आर्यों से इनका विरोध था।

मतंग–महा विद्वान थे जो निष्ठा और सदाचारिता के लिए शूद्र अथवा अनार्य होने पर भी आर्यों से समाज में अधिक प्रतिष्ठित थे।

कक्षीवान एवं औशिज–बड़े महान पुरुष हुए हैं। प्राचीन काल में अनार्य दास हुआ करते थे जो आज के शूद्र हैं। कक्षीवान और औशिज उन्हीं अनार्य दासों की सन्तान थे जो अपनी विद्वता के कारण महान कहलाये।

तुलाधार–ये जाति से व्याधा थे। बड़े विद्वान थे तथा तर्कशास्त्र में अजेय थे। इनका जजाति नामक ब्राह्मण से संवाद हुआ और इन्होंने उस ब्राह्मण को परास्त किया था। इनकी कथा महाभारत शान्तिपर्व में दी गई है।

प्रहलाद–आर्य और अनार्यों के संघर्ष में वीर अनार्य प्रहलाद का वर्णन आया है। देवी भागवत महापुराण में प्रहलाद का नर तथा इन्द्र से घोर युद्ध का वर्णन है, जिसमें नर और इन्द्र हथियार छोड़कर भाग गये थे। वीर प्रहलाद अनार्य–वंशज थे, जो अपनी वीरता और ज्ञान के लिए प्रसिद्ध थे। विष्णु ने इनके पिता को छल से मार डाला था। (देखें भागवत महापुराण) बाद में इन्होंने आर्यों से पिता की हत्या का बदला लिया।

महिषासुर–ये वीर बली असुर अनार्य थे। इन्हें आर्यों ने महिष बताया है किन्तु आर्यों के लिए यह कोई नई बात नहीं है। जामबन्त, हनुमान आदि आदिम जातियों के पुरुषों को उन्होंने जानवरों का नाम दिया है जो वास्तव में भारत की प्राचीन मूल निवासी अनार्य जातियां थीं। ये ऐसे वीर थे जिन्होंने विष्णु और देवताओं को युद्ध क्षेत्र में हराकर भगा दिया था। ब्रह्माजी भी डर की वजह से घर की तरफ भाग गये थे और उनके पीछे–पीछे इन्द्र भी ऐरावत हाथी छोड़कर भाग खड़े हुए थे।

महापद्मनन्द–ये चौथी–पांचवीं सदी के एक शूद्र वर्ग के राजा थे। इनकी राजधानी मगध थी। इनका राज्य धन–धान्य से परिपूर्ण था। सोने–चांदी की कोष में कमी नहीं थी। इसीलिए इनका नाम महापद्मनन्द पड़ा था। ये आर्य क्षत्रियों के इतने कट्टर विरोधी थे कि कहते हैं कि इनका सेना में कोई सिपाही आर्य क्षत्री नहीं था, सभी शूद्र थे। चाणक्य ब्राह्मण ने इनके साथ गद्दारी की थी।

चन्द्रगुप्त मौर्य–मौर्य वंश का शूद्र होना सभी को विदित है। इतिहास प्रसिद्ध चन्द्रगुप्त मौर्य शूद्र वंश के राजा थे, जिनकी गणना भारत के श्रेष्ठ शासकों में की जाती है, ये अशोक महान के पूर्वज थे।

आल्हा–ऊदल–पंडित सुन्दर लाल सगर ने अपनी पुस्तक 'यादव–जीवन' में आल्हा–ऊदल का हाल लिखा है। उन्होंने आल्हा–ऊदल को जाटव जाति का वीर पुरुष बताया है। ''आज से आठ सौ वर्ष से अधिक व्यतीत हुए, वीर रत्न आल्हा–ऊदल का अवतरण महोबे में हुआ। वीर आल्हा ने अपने बाहुबल से माण्डलीक पद प्राप्त किया था। उनकी राजधानी कलिंजर थी। समीपस्थ राजा इन वीरों को शूद्र होने के कारण नीच समझते थे। इसी कारण इन्होंने अपनी तलवार के बल पर उच्चताभिमानी राजाओं की कन्याओं से विवाह किया।'' इन्होंने पृथ्वीराज चौहान को भी एक बार परास्त किया था।

मध्य युग में उत्तर भारत में कबीर, रैदास, सेना, सदना, दादू आदि भक्त शूद्र कुल में उत्पन्न हुए थे और अपनी विद्वता, ज्ञान और भक्ति के कारण समाज में अधिक प्रतिष्ठावान बने।

रैदास–ये शूद्र वर्ण की चमार जाति में उत्पन्न हुए थे और निराकार मत के बहुत बड़े भक्त थे। चित्तौड़ की महारानी झालीबाई और इतिहास प्रसिद्ध मीराबाई उनकी शिष्या थीं। ब्राह्मण पंडितों को इन्होंने शास्त्रार्थ में कई बार हराया था। ब्राह्मणों ने इन्हें गद्दारी कर मरवा डाला था।

इन महापुरुषों के अतिरिक्त बड़े–बड़े सन्त समाज–सुधारक हुए हैं। चम्पा एक व्याधा–जाति की संन्यासिनी थी। सुभा लुहार की लड़की थी। पुन्ना और पुन्निका दास–पुत्री थीं। तिरुवल्लवर अति शूद्र जाति के थे, जिन्होंने कुरल नाम के भक्तिशास्त्र की रचना की थी। पंहति सित्तार शूद्र से भी अति शूद्र जाति के थे। भक्त नन्दनार अस्पृश्य परिया थे। चिदम्बर महातीर्थ के नटराज मन्दिर में प्रवेश करते ही प्रथम मूर्ति भक्तवर नन्दनार की है। दक्षिण भारत के भक्तों में सिद्धियर, पिल्लेयर, अमृतस, केनर

(शेष पृष्ठ 3 पर)

सम्पादकीय

चुनावी हार पर प्रलाप नहीं, हार के कारणों पर करो विचार

लोकसभा चुनाव–2019 के नतीजे आ गये हैं। इसमें लोकसभा की 573 सीटों में से अकेले भारतीय जनता पार्टी को 303 सीटें और उसके विभिन्न घटकों के 'एनडीए' गठबन्धन को 353 सीटें मिली है। वहीं उसकी विरोधी पार्टी कांग्रेस को सिर्फ 52 लोकसभा सीटों पर जीत मिली। कांग्रेस के 'यूपीए' गठबन्धन को 98 लोकसभा सीटें मिलीं। बहन मायावती की बसपा, अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी तथा चौ. अजीत सिंह के राष्ट्रीय लोकदल के महागठबन्धन को सिर्फ 15 लोकसभा सीटें ही मिल पाईं। इसमें से बहन मायावती की बहुजन समाज पार्टी (बसपा) को 10 लोकसभा सीटें तथा अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी (सपा) को 5 लोकसभा सीटें ही मिलीं। बिहार में कांग्रेस पार्टी के साथ बने राष्ट्रीय जनता पार्टी (आर.जे.डी.) महागठबन्धन का तो वहां चुनाव में खाता भी नहीं खुला। वहां उसकी बुरी हार हुई। बंगाल में ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस सिर्फ 22 लोकसभा सीटों पर सिमट कर रह गई, जहां 2014 के लोकसभा चुनावों में उसे 42 लोकसभा सीटें मिली थीं। कांग्रेस पार्टी के साथ राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी महाराष्ट्र में मिलकर चुनाव लड़ा था जहां उनकी भी बुरी तरह हार हुई। वहां शिवसेना के साथ भारतीय जनता पार्टी ने विजय का परचम फैलाया। अमेठी में अपनी परम्परागत लोकसभा सीट पर कांग्रेस पार्टी अध्यक्ष राहुल गांधी की बुरी हार हुई। वह दूसरी जगह केरल में वायनाड लोकसभा सीट पर चुनाव लड़े और भारी बहुमत से जीते।

लोकसभा के ये चुनाव नतीजे बताते हैं कि दक्षिण भारत को छोड़कर उत्तर पूर्वी भारत व शेष भारत में भारतीय जनता पार्टी अपने दम पर 303 लोकसभा सीटें जीतने में कामयाब रही। वहीं 17 राज्यों में तो कांग्रेस पार्टी का खाता तक नहीं खुला। उत्तर प्रदेश में 80 सीटों में से भाजपा ने 64 सीटें जीतीं, वहीं रायबरेली अपनी परम्परागत सीट से श्रीमती सोनिया गांधी मुश्किल से जीत पाई। महागठबन्धन तो यहां धराशायी हो गया।

अब लोकसभा के इन चुनावों में बुरी तरह से हुई हार पर भाजपा विरोधी सभी राजनैतिक पार्टियां प्रलाप करने में जुटी हैं, और अपनी हार का ठीकरा अपने गठबन्धन में शामिल दलों पर फोड़ने लगी हैं। उत्तर प्रदेश में बसपा सुप्रीमो मायावती ने महागठबन्धन की हार की जिम्मेदारी समाजवादी पार्टी पर डालते हुए कहा है कि सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव अपने प्रभाव के यादव वोट बसपा को नहीं दिला सके, वहीं बसपा ने अपने परम्परागत वोट सपा को दिलवाये। अब भविष्य में वह अकेले ही चुनाव लड़ेगी। मायावती को आशा थी कि उत्तर प्रदेश में 80 सीटों में से 55–60 सीटें वह जीत जायेंगी, और फिर प्रधानमंत्री पद के लिए वह अपना दावा ठोंक देंगी। इसके लिए वह अम्बेडकर नगर की सीट से चुनाव लड़ सकेंगी, पर मायावती की बसपा को चुनाव में मिली हार ने उनके प्रधानमंत्री बनने की इच्छा पर पानी फेर दिया। बसपा के समर्थकों का कहना है कि हमारे अपने लोगों ने गैस के चूल्हे व टायलेट के उपकार के बदले अपना वोट भाजपा को थोक में देकर उसे देश की सत्ता सौंप दी, जो बहुत गलत हुआ। वे इस पर अपने घर में बैठे शोक मना रहे हैं।

इस पर दि बुद्धिष्ट टाईम्ज के

(शेष पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/–
हमारे दलित गौरव	राजमल 'राज'	25/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
सत्सम दर्शन	राजमल 'राज'	100/–
जागा मेहनतकश इंसान	राजमल 'राज'	50/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/–

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक,

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी–3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–9

फोन : 27421449, 27421460, मो. 9810278936

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का नया मंत्रिमण्डल-2019

मंत्री और उनके आबंटित विभाग

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी : कार्मिक मंत्रालय, लोक शिकायत एवं पेंशन, परमाणु ऊर्जा विभाग, अंतरिक्ष एवं अन्य महत्वपूर्ण नीतिगत मुद्दों वाले विभाग तथा बिना आबंटन वाले अन्य विभागों का प्रभार।

कैबिनेट मंत्री

1. राजनाथ सिंह : रक्षा
2. अमित शाह : गृह
3. नितिन जयराम गडकरी : सड़क एवं राजमार्ग मंत्री तथा लघु एवं मध्यम उद्योग
4. डीवी सदानंद गौड़ा : रसायन एवं उर्वरक
5. निर्मला सीतारमण : वित्त मंत्रालय और वाणिज्य
6. रामविलास पासवास : उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं जन आपूर्ति
7. नरेंद्र सिंह तोमर : कृषि एवं किसान कल्याण, ग्रामीण विकास और पंचायत राज
8. रवि शंकर प्रसाद : कानून एवं न्याय मंत्री, संचार मंत्री तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी
9. हरसिमरत कौर बादल : खाद्य प्रसंस्करण
10. थावर चंद गहलोत : सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता
11. सुब्रमण्यम जयशंकर : विदेश
12. रमेश पोखरियाल 'निशंक' : मानव संसाधन विकास मंत्रालय
13. अर्जुन मुंडा : आदिवासी मामले
14. स्मृति जुबिन ईरानी : महिला एवं बाल विकास और कपड़ा मंत्रालय
15. हर्षवर्धन : स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान
16. प्रकाश जावडेकर : पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
17. पीयूष गोयल : रेल, वाणिज्य और उद्योग
18. धर्मेंद्र प्रधान : पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस, इस्पात, मंत्रालय
19. मुख्तार अब्बास नकवी : अल्पसंख्यक मामले
20. प्रहलाद जोशी : संसदीय कार्य मंत्री
21. महेंद्र नाथ पांडे : कौशल विकास एवं उद्यमिता
22. अरविंद गणपत सावंत : भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्यम
23. गिरिराज सिंह : पशुपालन, दुग्ध, एवं मत्स्य पालन
24. गजेंद्र सिंह शैखावत : जल शक्ति मंत्रालय

राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

1. संतोष कुमार गंगवार : श्रम एवं रोजगार मंत्रालय
2. राव इंद्रजीत सिंह : सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन, योजना मंत्रालय
3. श्रीपद यसो नाइक : आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक उपचार, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार) और रक्षा मंत्रालय में राज्यमंत्री
4. जितेंद्र सिंह : पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास, प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत एवं पैशन, परमाणु ऊर्जा विभाग के राज्य मंत्री और अंतरिक्ष विभाग में राज्य मंत्री
5. किरण रिजीजु : युवा एवं खंल मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार) और अल्पसंख्यक मामलों के राज्य मंत्री
6. प्रहलाद सिंह पटेल : संस्कृति मंत्रालय और पर्यटन मंत्रालय के राज्य मंत्री
7. राज कुमार सिंह : ऊर्जा मंत्रालय, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय के राज्य मंत्री
8. हरदीप सिंह पुरी : आवास एवं शहरी मामले, नागर विमानन मंत्रालय और वाणिज्य एवं उद्योग
9. मनसुख एल मंडाविया : जहाजरानी (स्वतंत्र प्रभार) और रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री।

राज्यमंत्री

1. फग्गन सिंह कुलस्ते : इस्पात
2. अश्विनी कुमार चौबे : स्वास्थ्य
3. अर्जुन राम मेधवात : संसदीय मामले, भारी उद्योग मंत्रालय
4. जनरल वीके सिंह : सड़क, परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय
5. कृष्णपाल गुर्जर : सामाजिक न्याय एवं अविकारिता मंत्रालय
6. दानवे राव साहेब दादाराव : उपभोक्ता मंत्रालय, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण में राज्य मंत्री
7. जी किशन रेड्डी : गृह मंत्रालय
8. पुरुषोत्तम रूपाला : कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
9. रामदास अठावले : सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता
10. साध्वी निरंजन ज्योति : ग्रामीण विकास मंत्रालय
11. बाबुल सुप्रियो : पर्यावरण, वन तथा जलवायु परिवर्तन
12. संजीव कुमार बालियान : पशु पालन, डेयरी तथा मत्स्य
13. धोत्रे संजय शामराव : मानव संसाधन विकास, संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा सूचना प्रौद्योगिकी
14. अनुराग सिंह ठाकुर : वित्त मंत्रालय और निगामित मामले
15. सुरेश अंगाडी : रेल
16. नित्यानंद राय : गृह
17. रतन लाल कटारिया : जल शक्ति
18. वी मुरलीधरन : विदेश और संसदीय मामले
19. रेणुका सिंह सरूता : आदिवासी मामले
20. सोम प्रकाश : वाणिज्य एवं उद्योग
21. रामेश्वर तेली : खाद्य प्रसंस्करण
22. प्रताप चंद्र सारंगी : लघु, एवं मध्यम उद्योग, पशुपालन, डेयरी तथा मत्स्य
23. कैलाश चौधरी : कृषि एवं किसान विकास मंत्रालय
24. देबश्री चौधरी : महिला एवं बाल किसान मंत्रालय।

पृष्ठ 1 का शेष.... अनार्य संस्कृति के नायक-2

आदि शूद्र ही थे।

गोरा—ये जाति के कुम्हार थे। बहुत बड़े ज्ञानी, परम बैरागी और नाथ सम्प्रदाय के महायोगी थे। ये ब्राह्मणवाद के कट्टर विरोधी थे।

सावंता—जाति के माली और बहुत बड़े सन्त थे। यह जीवन भर हिन्दू समाज में प्रचलित रुढ़िवादिता के विरुद्ध संघर्ष करते रहे।

जनाबाई—जाति की पासी थी। महाराष्ट्र के सन्तों में इनका नाम प्रमुख है। महाराष्ट्र के सन्त नामदेव महान भक्त और जाति से शूद्र दर्जी थे, जो बहुत से ब्राह्मणों के भी गुरु थे। असम के शंकरदेव जाति से शूद्र थे और महापुरुषिया सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे। कहते हैं कि उन्हीं की धारा में आगे चलकर दामोदर नामक ब्राह्मण ने एक नया सम्प्रदाय चलाया और पीछे से अपने गुरु का नाम मिटा दिया। (भारत में जातिभेद—क्षितिज मोहन सेन)

सन्त तुकाराम—ये महाराष्ट्र के बहुत बड़े कवि सन्त थे। सन्त तुकाराम को जाति से शुद्र होने के कारण ब्राह्मणों ने खूब सताया। ये बहुत बड़े गायक थे और भजनों की रचना स्वयं करते थे। कहते हैं कि ब्राह्मणों ने इनके भजन संग्रह को नदी में डुबो दिया था।

सन्त चोखामेला—ये जाति के महार थे। एक बार भक्ति के आवेश में आकर ये हिन्दू मन्दिर में चले गये किन्तु पाखण्डी ब्राह्मणों ने इन्हें धक्का देकर बाहर निकाल दिया। मन्दिर के अधिकारी ने उनको मरते दम तक घसीटते हुए घुमाये जाने की सजा दी किन्तु वह इस सजा को कार्य—रूप में परिणत नहीं कर सका।

ज्योतिबा फुले—यह बहुत बड़े क्रान्तिकारी, समाज सुधारक और शूद्र जाति के माली थे। कहते हैं कि एक बार यह किसी ब्राह्मण की बारात में सम्मिलित हुए जहां उनका घोर अपमान किया गया। वहां से इन्हें जागृति मिली और रूढ़िवादी ब्राह्मण धर्म को मिटाने के लिए खड़े हो गये। ये पश्चिमी, साहसी और अदम्य उत्साही थे। इन्होंने सत्य शोधक समाज की स्थापना की थी, जो ब्राह्मण वर्ग की श्रेष्ठता के विरुद्ध आन्दोलन करता था। ये तीर्थ, मूर्ति, अवतारवाद, पुनर्जन्म, भाग्यवाद और पुरोहितवाद के घोर विरोधी थे।

गोपाल बुवालंकर—यह महार सेना में हवलदार थे। इन्होंने 'अनार्य दोष परिहार मण्डली' नामक संस्था की स्थापना की थी। ये जाति के महार और बहुत बड़े अध्ययनशील व्यक्ति थे। इन्होंने अगणित ग्रन्थों का अध्ययन किया तथा आर्य और अनार्यों की खोज की। इस खोज में वे इस परिणाम पर पहुंचे कि आर्य और अनार्यों में आदिकाल से संघर्ष हुआ और अनार्यों को ही शूद्र वर्ण में धकेला। आगे चलकर उन्हें अछूत करार दे दिया। वे बहुत बड़े इतिहासकार थे।

यदि हम इतिहास को उठाकर देखें तो वैदिक काल से लेकर आज के युग तक ऐसे बहुत से महान पुरुष हुए जो निम्न वर्ग में पैदा हुए थे। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक हर क्षेत्र में उनका बहुत उच्च स्थान होना चाहिए किन्तु दुख का विषय है कि वर्णभेद और जाति—पांत प्रधान ब्राह्मणी सामाजिक व्यवस्था का यह प्रभाव रहा कि सवर्ण हिन्दुओं के महान पुरुषों को झूठ, कपट, व्यभिचार के अधिष्ठाता होने पर भी भगवान का अवतार और देवता कहकर पुकारा गया, किन्तु शूद्र वर्ण में उत्पन्न महायोगी, सदाचारी, प्रकाण्ड विद्वान, महाबली और वीर पुरुषों को या तो उनका वर्णन न कर जनमानस से दूर रखा या उनका वर्णन भी किया तो बहुत थोड़ा और उनकी बुराई के साथ। इन अनार्य महापुरुषों के संघर्ष के फलस्वरूप आर्यों ने अपनी संस्कृति में अनेक संशोधन और परिवर्धन किए जो हिन्दू संस्कृति के निर्माण में सहायक बने। आज हम हिन्दू संस्कृति का जो स्वरूप देखते हैं उसमें अनेक संस्कृतियों का योगदान है। हिन्दू संस्कृति में विश्व की अनेक संस्कृतियों का अंशदान है फिर भी यह एक अनोखी संस्कृति है, इसका मूल कलेवर इसका अपना निजी है जिसका आधार इसके युगपुरुषों, भगवानों, देवी—देवताओं महान ऋषियों और नीति संस्थापकों के वे सूत्र और कारनामे हैं जो इनके द्वारा समय—समय पर प्रतिपादित किए गए जो इनके धर्मग्रन्थों में समाहित हैं। वास्तव में ये भगवान, देवी—देवता, ऋषि, मुनि और नीति संस्थापक ही हिन्दू संस्कृति के स्तम्भ हैं जिनके प्रतिपादित सूत्रों और कृत्यों के आधार पर इस संस्कृति का निर्माण हुआ है।

आजीवक चंड अशोक

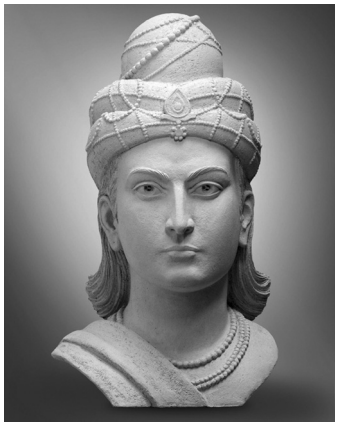

अशोक ने
बुद्धम् शरणम् गच्छामि कहा
सारी दुनिया बौद्ध हो गई।
अशोक देख रहे हैं
दुनिया को बौद्ध होते
भारत तो बौद्धमय ही हो गया।
एक पत्नी बिलख रही है
अपने पति को भिक्षु बनते देख
विलाप सुन रहा है चारों ओर
एक बच्चा रो रहा है
पिता को जाते देख
क्रंदन फैल गया है
चारों दिशाओं में
सूने घर, सूने गांव, सूना शहर
सारे देश में सन्नाटा पसरा पड़ा है
अशोक की आंखें पथरा गई हैं
कोलाहल मचा है
अफरा—तफरी फैली है
हर तरफ
विदेशी आक्रमणकारी आ गया है
चारों तरफ से आवाजें
सुनाई पड़ रही हैं
बुद्धम् शरणम् गच्छामि
अशोक की आंखों में
खून उतर गया है
उस ने उतार फेंके हैं
भगवा वस्त्र
अशोक बन गया है
फिर से आजीवक चंड अशोक
आक्रमणकारी और भिक्षु को तो,
अब विलुप्त होना ही था

—कैलाश दहिया

सम्पादकीय का शेष....चुनावी हार पर प्रलाप नहीं, हार के कारणों पर करो विचार

सम्पादक विजय बौद्ध का कहना है–''मायावती के नासमझ अंधभक्त मनुवादी ताकतों, आर.एस.एस., नरेन्द्र मोदी के खिलाफ आन्दोलन करने की बजाय तथा सामाजिक क्रांति व राजनीतिक क्रान्ति लाने की बजाय मायावती को सीधे प्रधानमंत्री बनाने में लगे थे। यदि अभी भी यही मंशा रही है तो मायावती प्रधानमंत्री कभी बन नहीं सकती, उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री भी बन नहीं पायेंगी। इसलिए 'ईवीएम' मशीन की हेराफेरी के खिलाफ एक बहुत बड़ा राष्ट्रव्यापी आन्दोलन खड़ा करने की जरूरत है।''

इस चुनाव में भाजपा को मिले प्रचंड बहुमत के विषय में अधिकांश विरोधी पार्टियों के नेताओं का कहना है कि ये लोकसभा चुनावों के नतीजे नरेन्द्र मोदी की आंधी, तूफान और सुनामी के कारण नहीं है, बल्कि यह 'ईवीएम' मशीन को चुनाव आयोग के साथ सेटिंग करने का कारनामा है, पर वे सब एकजुट होकर इसके खिलाफ आन्दोलन करने का कोई कार्यक्रम नहीं बना पा रहे हैं। कांग्रेस पार्टी तो इस हार से बुरी तरह से अभी उभरी ही नहीं है, उसे राज्यों में अपने शासन को बचाने में जुझना पड़ रहा गठबन्धन साथियों की कमियों व गलतियों पर भी विचार करना चाहिए जो अपनी पूर्ण विजय का सपना पाले हुए थे, जो पूरा नहीं हो सका।

दरअसल, विरोधी पार्टियां व उनके नेतागण अब भी भ्रम पाले हुए हैं कि उनकी हार का कारण चुनाव में इस्तेमाल की गई EVM (इलेक्ट्रिक वोटिंग मशीन) हैं जिसे भाजपा ने चुनाव आयोग से सेटिंग कर भाजपा के पक्ष में विरोधी प्रत्याशियों के वोटों को परिवर्तित कर लिया। उनके इस भ्रम को दूर करने के लिए हरेक EVM के साथ PPTM मशीन को जोड़ा गया जिससे निकली पर्ची से वे अपने डाले गये वोट का मिलान कर सकते हैं। उनके इन संशयों को दूर करने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया कि वोटों की काउटिंग करने के समय प्रत्येक विधानसभा के पांच पोलिंग बूथों के वोटों का मिलान पीपीटीएम मशीन में छपी पर्चियों से करेंगे। इस आदेश का पालन करते हुए चुनाव आयोग ने घोषणा की है कि ऐसे एक भी पोलिंग बूथ पर वोटों का मिलान गलत नहीं निकला।

पूरी चुनाव प्रक्रिया का गहन अध्ययन के बाद हम इस निष्कर्ष पर

3. हिन्दू धर्म संसद
4. राम मन्दिर समिति
5. शिव सेना–शिव शक्ति वाहिनी
6. अमरनाथ धर्मयात्रा समिति
7. बजरंग दल
8. गौरक्षा दल
9. हिन्दू युवा शक्ति दल
10. लक्ष्मीबाई महिला संगठन
11. हिन्दू धर्म उत्सव समिति
12. सम्राट महाराणा प्रताप राजपूत समिति
13. कुम्भ आयोजन समिति
14. साधु संत निर्वाणी अखाणा
15. हिन्दू धर्म संस्थान सेवा समिति
16. अखिल भारतीय ब्राह्मण सभा
17. अखिल भारतीय क्षत्रिय सभा
18. अखिल भारतीय वैश्य महासभा
19. धर्म देव स्थानम्
20. अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्
21. अखिल भारतीय अध्यापक परिषद्

इनके अलावा अनेक ऐसी शैक्षणिक, धार्मिक संस्थायें हैं जो हिन्दू विचारधारा के कारण भाजपा की समर्थक हैं। ऐसी संस्थाओं में, आर्य समाज, ब्रह्म समाज, वैष्णव समाज, शैव समाज (मोर्चा) हैं जो दलित, शोषित, आदिवासी, पिछड़े, अल्पसंख्यकों के बीच जाकर सेवा के बहाने हिन्दू विचारधारा का प्रचार करते हुए उनके वोट बैंक का भाजपा की ओर मोडने का काम करते हैं।

भाजपा कोई भी चुनाव ए.सी. कमरों में बैठकर नहीं लड़ती। इसके लिए वह अपने कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की सेना को चुनाव क्षेत्र में उतारती है और वहां चुनाव प्रबन्धन के तहत प्रत्येक कार्यकर्त्ता को जिम्मेदारी सौंपती हैं। इसमें सबसे पहले क्षेत्र की वोटर लिस्ट की जांच की जिम्मेदारी दी जाती है जिससे की फर्जी वोटरों को चिन्हित किया जा सके, फिर उसमें भाजपा समर्थकों को टिकभार करके उनकी सूची बनाई जाती है। फिर उन्हें पोलिंग बूथ तक लाकर उनका वोट भाजपा के पक्ष में डलवाने की जिम्मेदारी दी जाती है। भाजपा प्रत्येक पोलिंग बूथ की वोटर लिस्ट लेकर उसके प्रत्येक पन्ने पर छपे वोटरों की जिम्मेदारी के लिए 'पन्ना अधिकारी' बनाकर उसे इस संकल्प के साथ काम सौंपा जाता है कि उस 'पन्ना' के वोटरों को उनके घरों से निकालकर प्यार व नम्रता से प्रभावित कर भाजपा बन्धुवा हैं और उसके इशारे पर अपना वोट बसपा को ही देंगे, भले ही वह उनको कितना ही दुत्कारें, अवमानना करें, उपेक्षा करे। बहन जी ने अपना उत्तराधिकारी अभी अपने भतीजे को घोषित किया, जबकि वह राजनीति के विषय में अभी अनभिज्ञ है। उनकी पार्टी सबसे धनी पार्टी है, पर चुनाव में वह किसी दलित कलाकार, साहित्यकार, समाजसेवी को बसपा का टिकट देकर नहीं लड़ायेगी, भले ही वे रातदिन उनका गुणगान करते रहें। आज बसपा बहुजन समाज पार्टी न होकर सर्वजन समाज पार्टी हो गई है जिसका सर्वेसर्वा कोई दलित कार्यकर्त्ता नहीं बल्कि उनका महासचिव सतीश मिश्रा है। ऐसी हालत में 'बसपा' के साथ कब तक दलित समाज बंधा रहेगा? चुनाव में हार तो होनी ही थी।

देश में कांग्रेस सबसे पुरानी पार्टी है जिसने आजादी की लड़ाई लड़कर देश को आजाद कराया। 1947 में आजादी मिलने से लेकर 1971 तक कांग्रेस पार्टी का एकछत्र राज रहा। उसके बाद उसका विघटन शुरू हुआ, पर फिर भी वह समय–समय पर देश के शासन पर आरूढ रही। इसका कारण कांग्रेस के पास भी उसके निस्वार्थी

है। विरोधी नेताओं का कहना है कि भारत का मीडिया बिका हुआ है। वह समाज व देश के लिए नहीं, बल्कि पूंजीपतियों, उद्योगपतियों एवं साम्प्रदायिक ताकतों को मजबूत किये जाने में लगा रहा और उसने जनता की ज्वलंत समस्याओं व मुद्दों को उठाने की जगह हिन्दुस्तान–पाकिस्तान, आतंकवाद, सर्जिकल स्ट्राईक, एयर स्ट्राईक और नरेन्द्र मोदी के गुणगान में जुटा रहा। मीडिया को देश में व्याप्त न बेरोजगारी, महंगाई, गरीबी, भुखमरी दिखाई दे रही थी और न ही उसके रोटी, कपड़ा, मकान का मौलिक अधिकार। उसे न तो दलित, शोषित, वंचित लोगों पर हो रहे अत्याचार नजर आ रहे थे, न ही महिलाओं और अल्पसंख्यक मुसलमानों पर हो रहे बर्बर अत्याचार दिख रहे थे। वह तो चुनाव में भाजपा के कामों के स्थान केवल–केवल नरेन्द्र मोदी की वीरता, शौर्यता, और पाकिस्तान के घर में घुसकर मारने वाला महान राष्ट्रवादी कार्य दिखाने के प्रचार में जुटा था कि ये सब मुमकिन है मोदी जी के रहने पर।

यह तो एक तस्वीर है लोकसभा के चुनाव में हुई शर्मनाक हार पर देश की विरोधी राजनीतिक दलों व उनके नेताओं की हार पर प्रलाप का, पर हमें उन सभी विरोधी दलों व उनके पहुंचे हैं कि नरेन्द्र मोदी की भाजपा की प्रचंड जीत EVM (इलेक्ट्रिक वोटिंग मशीन) में सेटिंग या गड़बड़ी के कारण नहीं हुई, बल्कि भाजपा के 'एक्सीलेंट वोटिंग मैनेजमेंट' (EVM) के कारण हुई है। भाजपा का लोकसभा चुनावों का प्रबन्धन एकदम सर्वोत्तम, अटूट और पारदर्शी भी था, जबकि विरोधी दलों और उनके गठबन्धनों का चुनाव–प्रबन्धन बिखरा हुआ था और उसकी एकजुटता कहीं भी प्रदर्शित नहीं हो रहा थी। इसका सबसे प्रबल कारण भाजपा और उसके संगठनों की एकजुटता, अटूट तालमेल और धार्मिक सम्बद्धता थी। वहीं, विरोधी दलों का विभिन्न विरोधी विचारधाराओं से बना गठबन्धन भी अपने बिखरे वोटों को एक साथ जुटाकर पोलिंग बूथ तक लाने में नाकामयाब रहा।

हम जानते हैं कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सम्पूर्ण शक्ति और प्राण उसकी हिन्दू विचारधारा के कारण उससे जुड़े उनके घटकों से है जिन्होंने भाजपा के अभिन्न अंग के रूप में पर्दे के पीछे रहकर भी तन मन धन से चुनाव में भाजपा को जिताने के लिए एकजुट होकर काम किया। भाजपा की ये संगठन शक्ति के घटक हैं–

1. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.)
2. विश्व हिन्दू परिषद्

है। इनके अपनी शिक्षण संस्थायें–स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय हैं, जहां से पढ़ लिखकर निकले स्नातक, शिक्षक, छात्र, वैदिक या हिन्दू विचारधारा से प्रभावित होने के कारण वे भी भाजपा की विचारधारा से सहमति रखते हैं। देश में लाखों हिन्दू देवी देवताओं के मंदिर हैं जहां के ब्राह्मण, पुरोहित, पुजारी हिन्दू धर्म से जुड़े होने के कारण भाजपा से सीधे जुड़े होते हैं और वे सब पर्दे के पीछे भाजपा को जिताने के लिए निरन्तर कार्य करते हैं। इसके एवज में उन्हें धन व वस्त्र देकर सम्मानित किया जाता है क्योंकि ये पंडित पुजारी ही मन्दिरों में रामायण, भागवत गीता, सुन्दरकांड पाठ, मां भगवती जागरण का आयोजन कर श्रोता भक्तों को भाजपा का अन्ध भक्त बनाते हैं। हर चार साल में हरिद्वार, नाशिक, प्रयाग, उज्जैन में लगने वाले कुम्भ मेला आयोजन भी हिन्दूधर्म से जुड़ा होने के कारण भाजपा का थोक वोट का कार्य करता है क्योंकि उनमें आने वाले श्रद्धालु भक्त व साधु संतों के धार्मिक अखाड़े भाजपा की हिन्दू विचारधारा को आगे बढ़ाते हैं।

ये उपरोक्त धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक संस्थायें हिन्दू धर्म विचारधारा के कारण पर्दे के पीछे से भाजपा के लिए सुनामी का काम करती है। इसके अतिरिक्त भाजपा के विभिन्न प्रकोष्ट के पक्ष में उनका वोट डलवायेंगे। इस चुनाव में लाखों ऐसे 'पन्ना अधिकारियों को दृढ़ संकल्प के साथ लगाकर पोलिंग बूथ पर भाजपा के पक्ष में वोट डलवाया और प्रचंड बहुमत पाकर सरकार बना ली। नरेन्द्र मोदी जी फिर प्रधानमंत्री बन गये। इस चुनाव में मीडिया ने भी खुलकर भाजपा का प्रचार किया–यह भी भाजपा का चुनाव प्रबन्धन का एक अंग था जिसमें हर टीवी चैनल पर हर मिनट पर गूंजता था–'एक बार फिर मोदी सरकार। भाजपा के कमल का बटन दबाइये, मोदी को प्रधानमंत्री बनाइये।'

देश के विरोधी दल अपने गठबन्धनों के बल पर चुनाव जीतने का स्वप्न देख रहे थे, जबकि उनका गठबन्धन ऊपरी–चुनावी मंचों तक सीमित था। चुनाव के 'पोलिंग बूथों पर उनके कार्यकर्त्ता नदारद थे। ऐसे में उनके वोटों को पोलिंग बूथ पर लाकर अपने पक्ष में वोट डलवाने में वे असफल रहे। सपा–बसपा–रालोद महागबन्धन अपनी गलतियों के कारण उल्टे मुंह के बल गिर गया। वैसे भी अखिलेश यादव (सपा) और तेजस्वी यादव (आर.जे.डी.) पारिवारिक कलह के कारण वोटरों का दिल जीतने में नाकामयाब रहे।

बहन मायावती (बसपा) समझती है कि चमार (जाटव चमार) उसके कार्यकर्त्ताओं की शक्ति, उसके विभिन्न घटक यथा कांग्रेस सेवा दल, युवा कांग्रेस, स्वतंत्रता सेनानी संगठन, भारत सेवक समाज, हरिजन सेवक संघ, आदिवासी सेवा संघ, स्वदेशी प्रचार समिति, अस्पृश्यता निवारक संघ, खादी प्रचार समिति, भूदान चंदा समिति भी जिनके साथ करोड़ों कार्यकर्ता जुड़े थे। इसके अलावा दलित शोषित आदिवासी, पिछड़े व अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ हैं। पर जब से ये प्रकोष्ठ नाम के रह गये, कांग्रेस से लोगों का मोह खत्म होता चला गया। आज उसके पास सच्चे, लगनशील, निःस्वार्थी कार्यकर्त्ताओं का अभाव है इसलिए उसका चुनाव प्रबन्धन भी न के बराबर होने के कारण उसे 2014 के बाद एक बार फिर बुरी हार का मुंह देखना पड़ा। आज वह लोकसभा की 52 सीटों तक सिमट कर रह गयी है। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी युवा है और देश उन पर विश्वास करने को तैयार है, पर अब उन्हें भावुकता छोड़कर 'ईवीएम' को हार का कारण न मानकर अपने संगठन की कमजोरी को चुनाव में हार का कारण मानकर भाजपा की तरह 'एक्सीलेंट वोटिंग मैनेजमेंट' (EVM) के लिए अपना सशक्त नेटवर्क खड़ा करें जिससे कि आगामी चुनावों में उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त हो सकें।

– डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

हिमायती
4 / जून (द्वितीय), 2019 (कुल पृष्ठ 4)
पोस्टल डिस्पेच तिथि : 16-17 जून, 2019

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020
प्रकाशन तिथि : 12 जून, 2019

जलियांवाला बाग हत्याकांड की शताब्दी के महानायक - शहीदे आजम ऊधम सिंह

इन्कलाब के अग्रदूत, देश के सच्चे सपूत, भारत को स्वतन्त्र कराने को क्रान्ति बिगुल बजाने वाले, स्वाधीनता संग्राम के खूनी इतिहास के हस्ताक्षर धुन के धनी अमर शहीद ऊधम सिंह का जन्म 26 दिसम्बर, 1899 में पंजाब प्रान्त के जिला संगरूर के ग्राम सुनाम के एक बहुत ही निर्धन परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम दूहर राम चमार था जो सरदार बनने पर तेहल सिंह हो गया था तथा माता का नाम नारायणी देवी था जो बदलकर हरनाम कौर हो गया था। वे पटियाली जिला एटा के मूल निवासी थे।

प्रारम्भिक जीवन—ऊधम सिंह का बाल काल अत्यन्त दुखद रहा क्योंकि जन्म से दो वर्ष बाद माता का देहान्त हो गया तथा सात वर्ष की अवस्था में पिता देहान्त हो गया। इनके एक भाई का नाम साधो सिंह था। माता—पिता के मर जाने के बाद दोनों भाई अनाथ हो गये। परिवार में भी उनकी देखभाल करने वाला और कोई न था। बेसहारा अनाथ ऊधम सिंह व भाई साधो सिंह दोनों भूखे प्यासे गलियों में भटकते

ब्रिटिश सरकार बौखला उठी और सैकड़ों भारतीयों को गिरफ्तार कर लिया। इस गिरफ्तारी के प्रति क्रोध प्रकट करने के लिए वैशाखी के दिन 13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सभी वर्ग के लोग शामिल थे। सभा में भाषण हो रहे थे तभी अचानक सर माइकल ओ डायर पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर, ब्रिगेडियर जनरल ई.एच. डायर और लार्ड जेडलेड वहां आ धमके। उन्होंने बिना किसी पूर्व चेतावनी के विशाल जन समूह पर गोली चलवा दी। इस हत्याकाण्ड में सबसे पहली गोली मंच पर भाषण दे रहे अमर शहीद श्री नत्थू लाल धोबी को लगी। इस काण्ड में लगभग एक हजार लोग मारे गये थे जिसमें स्त्री पुरुष और बच्चे शामिल थे।

इस निर्मम हत्याकांड के 19 वर्षीय किशोर ऊधम सिंह प्रत्यक्षदर्शी थे। क्रूरता और नरहत्या के इस भयानक दृश्य को देखकर ऊधम सिंह के मन को अभी जिन्दा थे। ऊधम सिंह इनके पीछे लग गये। इन्होंने एक पिस्तौल प्राप्त किया जिसे वे सदा अपने पास रखते थे।

13 मार्च 1940 को सर माइकेल ओ डायर और लार्ड जेटलैंड लंदन के केक्टन हाल रायल सेंट्रल में एशियन सोसाइटी और ईस्ट इंडिया एसोशिएशन की सभा में भाग ले रहे थे। मौका पाकर ऊधम सिंह भी उक्त सभा में एक श्रोता के रूप में पहुंच गये। वे मंच से कुछ दूरी पर बैठ गये। सभा में माइकेल ओ डायर ने एक उत्तेजक भाषण दिया जिसमें उसने अपने स्वभाव के अनुसार भारत के विरुद्ध विष वमन किया तथा भारतीयों पर कठोर नीति अपनाये जाने की अपील की, किन्तु जैसे ही डायर बैठने को हुआ तभी ऊधम सिंह ने पिस्तौल निकाल ली और माइकेल ओ डायर पर गोली दाग दी। वे वहीं ढेर हो गये। ऊधम सिंह ने लार्ड जेडलैंड पर भी गोली चलाई किन्तु वह घायल होकर बच गया। उस समय शाम के चार बज रहे थे। सभा हाल में भगदड़ मच गयी। ऐसे में ऊधम सिंह बच सकते थे लेकिन वे दृढ़ता से सीना तानकर वहीं खड़े रहे और बोले—माइकेल ओ डायर को मैंने मारा है। दूसरों को घबराने की कोई जरूरत नहीं। इसके बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर मुकद्मा चला।

2 अप्रैल, 1940 में ऊधम सिंह को अदालत में पेश किया गया जहां उन्होंने ब्रिटिश मजिस्ट्रेट के सामने बयान दिया कि ''मैंने यह हत्या इसलिए की है क्योंकि माइकेल ओ डायर जलियांवाला बाग काण्ड का असली अपराधी था। वह हमारे भारत देश को कुचल देना चाहता था। इसलिए मैंने उसे ही कुचल दिया। मैं 21 वर्ष प्रतिशोध की आग में जतला रहा। मुझे खुशी है कि मेरी प्रतिज्ञा पूरी हुई। मैं देश के लिए मर रहा हूं। क्या लार्ड जैट लैंड भी मर गया? हां उसे भी मरना चाहिए था, क्योंकि मैंने उसके भी दो गोलियां मारी थीं। मुझे किसी भी सजा पर अफसोस नहीं होगा, मैं देश के लिए प्राण त्याग रहा हूं। मेरा यह परम कर्तव्य है।'' इसके बाद 12 जून, 1940 को पैटोविल जेल में उन्हें फांसी दे दी गयी और वह देश के लिए शहीद हो गये। स्वतन्त्रता के बाद अमर शहीद ऊधम सिंह की अस्थियां भारत लाई गयीं।

इस प्रकार शहीद ऊधम सिंह साहस—निर्भीकता तथा देश भक्ति का अनूठा उदाहरण छोड़ गये। भारत का शहीदे आजम हमारे देश का स्वाभिमान है पर जात्याभिमनी कलमकारों ने इस अमर शहीद को इतिहास के पृष्ठों से ही मिटाने का दुष्कर्म किया, क्योंकि यह शौर्य का पुरोधा दलित जाति का सेनानी था। •

फिरते थे। भारत में जातिवाद का भूत चरम सीमा पर था ही अछूत होने के कारण सभी उनसे घृणा करते थे। वे अमृतसर के पुतलीघर अनाथालय में पहुंच गये जहां बड़े हुए तथा अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू और हिन्दी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। अनाथालय में ही ऊधम सिंह ने बढ़ईगीरी का काम सीखा जो उनके जीवन यापन का साधन था।

ऊधम सिंह के मन में अपने देश तथा दलित शोषित समाज के उत्थान के प्रति विशेष स्नेह था। गुलामी, बेगारी और रात दिन की कड़ी मेहनत के बावजूद आपका झुकाव स्वतन्त्रता संग्राम की ओर हो गया।

अंग्रेजों ने सन 1914 में जस्टिस सिड़नी रोलट की अध्यक्षता में एक समिति गठित की जिसके द्वारा 'रोलट एक्ट' बनाया गया। इस एक्ट के अनुसार अंग्रेजी सरकार किसी भी व्यक्ति को बिना किसी वारन्ट के गिरफ्तार कर सकती थी तथा बन्द कर न्यायालय में उस पर मुकद्मा चला कर सजा भी दी जा सकती थी जिसके खिलाफ किसी को भी अपील करने का अधिकार नहीं था। इस एक्ट के खिलाफ भारतीयों ने 30 मार्च, 1919 में 6 अप्रैल तक आन्दोलन चलाया। इस आन्दोलन में गम्भीर आघात पहुंचा। बेगुनाह भारतीयों के ऊपर चलाई गयी गोलियों की दर्द भरी चीख ऊधम सिंह के सीने में समा गयी। तब ऊधम सिंह ने कसम खाकर प्रतिज्ञा की कि मैं देशवासियों के लहू के हर कतरे का हिसाब इस काण्ड के 3 प्रमुख खलनायक गवर्नर सर माइकेल ओ डायर, ब्रिगेडियर जनरल ई.एच. डायर और लार्ड जेटलेड से चुकाऊंगा।

इस घटना के विरोध में भारतीयों के प्रतिशोध को देखकर ब्रिटिश सरकार ने जनरल ओ डायर को ब्रिटेन स्थानांत्रित कर दिया था। प्रतिशोध की आग में चलते हुए ऊधम सिंह सबसे पहले दक्षिण अफ्रीका पहुंचे। वहां से वे अमेरिका गये जहां उन्होंने संघर्षशील क्रान्तिकारियों से भेंट की। 1923 में वे इंग्लैण्ड पहुंच गये। लेकिन 1928 में भगत सिंह की सूचना पर वे भारत वापस चले आये। ऊधम सिंह 1933 में जर्मन चले गये, जहां उन्होंने इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया लेकिन जलियांवाला बाग वाला कांड इनके दिमाग में छाया रहा। वे प्रतिशोध की आग में तपते रहे। तब तक जनरल डायर मर चुका था, लेकिन सर माइकेल ओ डायर और लार्ड जेटलैंड

वोट है प्रतीक बाबा साहब अम्बेडकर के संघर्ष का

लोकतंत्र के महापर्व में
मतदान है हमारा
लोकतांत्रिक अधिकार
जिससे बनेगी नई सरकार
देश के विकास वाली या
देश के विनाश वाली।
इसलिए जरूरी है
देश के विकास के लिए
अपना वोट देने से पहले
ठोक बजाकर, मन में मंथन कर
तय कर लें
अपने उस उम्मीदवार को
जो आपके वोट से जीतकर
काम करे देश, समाज, जनमानस के
उत्थान का, कल्याण का, विकास का,
आपके मन अनुरूप,
जन मन अनुरूप क्योंकि,
आपका 'वोट' अनमोल है, अमूल्य है,
यह बाबा साहब डा. अम्बेडकर के
संघर्ष का प्रतीक है,
उनके बलिदानों का प्रतीक है,
यह उनकी उस दहाड़ का प्रतीक है
जो उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत से की थी
लंदन की राउंड टेबुल कान्फ्रेंस में
भारत के अछूतों को सत्ता में
भागीदारी के लिए
देने को 'वोट' का अधिकार।
बाबा की मांग को स्वीकार कर
दिया था दो वोटों का अधिकार
ब्रिटिश सरकार ने–
एक वोट से दलित नुमायन्दा
चुनने के लिए,
दूसरे वोट से सवर्ण प्रतिनिधि
चुनने के लिए
दलितों के पृथक निर्वाचन क्षेत्र बनाकर।
पर सनातनी मनुवादी महात्मा गांधी को
न था मंजूर अछूतों को
अंग्रेजों द्वारा दिया जाने वाला
सामाजिक समता के दो वोटों का अधिकार
गांधी ने आमरण अनशन की घोषणा कर
अछूतों को मिल इन दो वोटों के
अधिकार में फांस लगा दी।
हिन्दू नेताओं ने
बाबा साहब पर दबाव बनाया कि
वह अंग्रेजी सरकार द्वारा दिये गये
'दो वोट' के अधिकार को लौटाकर
गांधी जी के प्राण बचायें
वरना दलितों के साथ
खून खराबे को तैयार हो जायें,
बाबा साहब ने दलितों को
खून खराबे से बचाने के लिए
गांधी के साथ 'पूना पैक्ट' कर
दो वोट के अधिकार को छोड़,
गांधी को जीवनदान दिया।
उस 'पूना पैक्ट' ने ही दलितों को दिया–
निर्वाचन में वोट का अधिकार,
निर्वाचन में उनके आरक्षित
क्षेत्रों के साथ, शासन–प्रशासन,
शिक्षण संस्थानों में उनके लिए
आरक्षित कोटा निर्धारित करके।
इन्हीं सामाजिक समता के अधिकारों को,
भारतीय संविधान में दर्ज कर
बाबा साहब ने बना दिया संवैधानिक।
इसलिए मैं कहता हूं कि यह 'वोट'
बाबा साहब के संघर्षों का प्रतीक है,
बलिदान का प्रतीक है,
यह हमें गांधी को दिये
जीवनदान की एवज में मिला है,
कोई भीख में नहीं मिला है।
हम अपने 'वोट' की कीमत समझें और
सामाजिक परिवर्तन के लिए
अपना 'वोट' देकर
बाबा साहब की आशा और आकांक्षाओं
को पूरा करें ताकि
भारतीय संविधान प्रदत्त स्वतंत्रता,
समता, बन्धुत्व, न्याय के अधिकार पाकर
नया भारत बना सकें। •

– डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - श्रीमती त्रिलोचन सुमनाक्षर ❑ व्यवस्थापक : जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**
नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।
सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009